भगवत कृपा

THE DIVINE GRACE

महाप्रभु स्वामिनारायण प्रणीत सनातन, सचेतन और सक्रिय गुणातीतज्ञान का अनुशीलन करने वाली मासिक सत्संग पत्रिका

वर्ष 19 अंक : 8	सम्पादक : **प्रभाकर राव**	वार्षिक चन्दा : 50.00
सोमवार 26/8/96	अगस्त-1996	प्रति अंक : 5.00

ब्रह्मप्रवाह

प्रत्यक्ष की निष्ठा-यही रक्षाबंधन!

-प.पू. काकाजी महाराज

(1983)

पवित्रता व प्रेम की सुवास फैलाता हुआ रक्षाबंधन का पवित्र त्यौहार आ रहा है.... अन्य त्यौहारों की तरह प्रगट के उपासकों का 'रक्षाबन्धन' भी अनोखा ही होगा न !

'राखी' रक्षा के अभयदान का पर्व है। रक्षा किसे नहीं चाहिए? बाहरी सुख-समृद्धि से भरा-भरा दिखाई पड़ता आज का सारा मानव समाज भीतर से डरा हुआ है... क्या होगा? कैसे होगा? होगा या नहीं? और इन सभी चिंताओं का समाधान, द्वन्द्वों का अंत केवल भगवान अखंड रखे संत की शरण में ही निहित है। व्यावहारिक या आध्यात्मिकरूप से हमारे चैतन्य की रक्षा केवल ऐसी विभूति ही कर सकती है। प्रह्लाद, मीरां, नरसिंह महेता, द्रौपदी के प्रसंगों द्वारा इतिहास इसकी साक्षी भी देता है। परन्तु इन सब की नींव यदि देखें तो सही अर्थ में प्रभु की दृढ़ निष्ठा जो उन्हें थी... और...अपने ईष्टदेव के प्रति उनकी वह निष्ठा दिखावे की या खोखली नहीं थी-तमाशा नहीं था, बल्कि विपरीत संजोगों में भी अत्यधिक दृढ़ थी और इसलिए विजय इन भक्तों की हुई.....

भगवान श्रीकृष्ण ने कहा है–

'स्वल्पमप्यस्य धर्मस्य त्रायते महतो भयात्।'

इस श्लोक का अर्थ यह है कि–''भगवत्स्वरूप का बल चाहे ज़रा-सा, लेशमात्र हो तो भी बड़े भय से हमारी रक्षा होती है।''

श्रीजी महाराज ने वच. ग.म. 9 में इसी बात की पुष्टि करते हुए उदाहरण देखकर समझाया कि-

'..... बुद्धिमान को तो भगवतस्वरूप का बल अत्यधिक रखना चाहिए। थोड़ा-सा भी यदि यह बल हो तो बड़े भय से रक्षा होती है... जैसे महाभारत के युद्ध के दौरान अर्जुन को कई प्रकार के अधर्मरूपी बड़े-बड़े भय आये, परन्तु उन सभी भय से अर्जुन की जो रक्षा हुई-वह भगवत्सवरूप के बल के प्रताप से हुई।'

सो, प्रगट के भक्तों को तो हर संजोगों में भीतर में अर्जुन की तरह रखना चाहिए कि-'सर्वोपरि व सदा दिव्य साकार मूर्ति एवं अवतारों के अवतारी ऐसा जो भगवान का स्वरूप है–वह मुझे प्राप्त हुआ है और वो जो करेंगे, मेरे परम हित में ही करेंगे।'

भगवान स्वामिनारायण ने तो अपने आश्रितों को जो अभय वरदान दिए हैं-उनसे वो अपने आश्रितों की रक्षा सहज करते ही होते हैं.. पर हम प्रभु के पास अपने मूल्यांकनों, गिनती के मुताबिक रक्षा चाहते हैं और वैसी कामना पूरी ना होने पर प्रभु को ही दोषी ठहराने नहीं चूकते। उनमें ही अविश्वास-शंका-आशंकाएं करने लग जाते हैं। हम देह की, धन की, मान की, सत्ता की, अपने तौर-तरीके, सात्विक वृत्ति वगैरह की रक्षा करवाने प्रभु से इच्छा रखते हैं और... वो प्रभु चलने नहीं देते तो हमारे व उनके बीच मानसिक संघर्ष चलता रहता है। पर, प्रभु की सर्वोपरि सत्ता, शक्ति का स्वीकार नहीं करते... जबकि प्रभु अपने संबंध वाले का, उनके आसरे वाले का, उनमें दृढ़ निष्ठा रखने वाले का कभी अहित नहीं करेंगे,

बल्कि वे तो हमें प्रकृति पुरुष से पर ऐसे अक्षरधाम से किसी अवांतर भूमिका में रहने नहीं देने लगे होते हैं।

यदि सम्पूर्ण दिव्यभाव दृढ़ हो जाए तो फिर रक्षा मांगनी नहीं पड़ती। ऐसे सेवक की सम्पूर्ण जवाबदारी प्रभु स्वयं ले लेते हैं और ऐसे सेवक को अपने संबंध से हल्का फूल बनाकर निश्चिंतता बक्शिश दे देते हैं... तो क्यों न दृढ़निष्ठ होकर रक्षाबंधन के पुनीत अवसर पर प्रार्थना करें कि प्रगट की हमारी यह निष्ठा दृढ़ रहे... उसमें कभी ज्वार-भाटे न आयें, समता रहे। निम्नलिखित रक्षाबंधन के अपने संदेश में प.पू. ककाजी ने प्रगट के उपासकों के लिए सच्चा रक्षाबंधन मनाने की रीति विस्तारपूर्वक समझाई है। तो आइये, हम सभी प.पू. काकाजी द्वारा दिए इस संदेश के मुताबिक **सच्चा रक्षाबंधन** मनाने कृतनिश्चियी बनें....

रक्षाबंधन का संदेश

4.8. '82

प्रातः स्मरणीय सर्वोत्कृष्ट, सर्वोपरि स्वरूप प.पू. योगी बापा व प्रत्यक्ष बड़े स्वरूपों को हृदय में धारकर इनके चरणों में शीश झुकाकर गद्‌गद् कंठ से तीव्र अभीप्सा से प्रार्थना करें....

हे महाराज ! हे बापा ! हे संतों ! हे प्रत्यक्ष स्वरूपों ! हमारी जो कसर हो, हमने जो अपनी गरिमा मानी हो वे सभी आपकी कृपा से, आपकी दृष्टि से, आपके अनुग्रह से सम्पूर्ण टालकर हमारे जीव की सम्पूर्ण रक्षा करना। क्योंकि, अक्षरधाम में मुक्तों को भी कसर टालने-यानि 'जैसे हैं वैसे पहचानने' यहीं आना ही पड़ता है। सो, हमारी भी ऐसी कोई अस्मिता आपकी कृपा से टल जाये और सिर्फ-सिर्फ आपकी ही पसंदीदा सहिष्णुता से कर सकें, ऐसे आशीर्वाद देना !

जानते तो हैं कि उपनिषद् का साधक जिज्ञासु और सत्यशोधक था। गीता का साधक जिज्ञासु होते हुए सखा भी था और आखिरकार साथीदार बना व अंत में भगवत्स्वरूप भी बना। खुद का भाव गुरुचरण में सम्पूर्णतया छोड़ने के बाद-उपनिषद् वाले की अपेक्षा इस साकार उपासना में निश्चिंतता व निर्भयता है, लेकिन समता, सरलता और नम्रता आने में खूब देर लगती है।

महाराज का मुक्त निश्चय से ही सिद्ध है और स्वयं का भाव सम्पूर्ण छोड़े तो सखा भी है तथा साधु को पहचाने, सुहृद्‌भाव रखे तो एकांतिक भी है। साधु के संबंध में सेवकभाव से ही शुरुआत होती है और अंत में दास व दास का भी दास बनना है। पू. बापा के संबंध वाले हम सभी का भी दास बनना है। पू. बापा के संबंध वाले हम सभी म. 9 और प्र. 15 के मुताबिक स्वरूपयोग करते हैं और स्वरूप का बल लेते हैं सो, एकांतिक तो हैं ही, लेकिन हमारी महत्ता, हमारी गरिमा रहती है जिससे दूसरों का देखते रहते हैं, दूसरे को उपदेश दे देते हैं, दूसरों का दोष देखा करते हैं। तो अब हमारा, सर्वस्व प्रभु को ही अर्पण करके, उनमें से जो आए, वैसे ही कार्य करने के लिए नवकार मंत्र सिद्ध कर लें। यह साधु का ज्ञान है।

हम हमारी पूर्णता प्रभुकृपा से प्राप्त करके सहिष्णुता व सुहृद्‌भाव बढ़ाये, ऐसी दिव्यदृष्टि पू. बापा करवा दें। इस हेतु सवा-सवा घंटे के दो अनुष्ठान करना और श्वास में भी-हर एक क्रिया में पू. बापा का अनुसंधान भूले ही नहीं, ऐसी आदत डालनी।

इस भावना से मंत्रित यह राखी भेजी है, तो स्वीकारना। हमारी निष्ठा की व एकांतिकभाव की रक्षा बापा करेंगे ही हमारी जय है-विजय है ही.... सिर्फ हमारा अभिगम वदलना है। पुराना ढांचा बदलकर जीवन जीने की सहिष्णुता वाली दृष्टि रखने की तालीम से आगे-पीछे बापा ही दिखाई देंगे और का. 7 सिद्ध होगा। सभी को बापा यह करा दें यही सभी को अन्तर के जय श्री स्वामिनारायण....

(उपरोक्त संदेश के प्रारम्भ में पूजन के टीके व अंत का स्वास्तिक रूप में राखी का शुभ चिह्न प.पू. काकाजी महाराज ने स्वयं अपने करकमलों से बना कर भेजा था... सो, हम सभी के लिए यह पूजन के टीके व राखी का चिह्न प्रासादिक व दर्शनीय है....)

पहली सितम्बर... अमर गुणातीत भावना के ज्योतिर्धर की जन्मजयंती!

ओहो हो! श्वेत वस्त्रों में करुणामयी दृष्टि प्रदान करती स्फटिक के समान पारदर्शक व स्वधर्म में अडिग हिमालय जैसे 'स्वरूप की स्थितप्रज्ञ' विभूति यानि-बृहद गुणातीत समाज के प्राणपुरुष प.पू. पप्पाजी की जन्मजयंती का महामंगलकारी दिन.. ऐसी विभूतियां संबंध में आने वाले मुक्तों को मूर्ति देकर उनके चैतन्य की शुद्धि करके प्रभु के मार्ग पर अग्रसर करने धरती पर प्रगट होती हैं...

प.पू. पप्पाजी से हम सभी परिचित हैं... गुरुहरि योगीजी महाराज की जीव में अनुभूति होने के बाद प.पू. पप्पाजी ने गुरुहरि योगीजी महाराज को हर पल सर्व कर्ताहर्ता-नियंता माना ! गुरुहरि योगीजी महाराज के वचन में अतिशय विश्वास रखा और प.पू. काकाजी के सहभागी रहकर अल्प संबंध वालों को माथे का मुकुट मानने में जीवन की परम धन्यता मानी, जिससे गुरुहरि योगीजी महाराज के हृदय की प्रसन्नता पाकर सच्चे वारिसदार बने और आज उनके पनौते पुत्र बनकर विश्व में प्रभु का पावन प्रकाश फैला रहे हैं....

पर साथ-साथ हम भूलें नहीं कि-प.पू. काकाजी, प.पू. पप्पाजी, प.पू. स्वामिजी जैसे गुणातीत स्वरूप हमारे लिये ही सैकण्ड-सैकण्ड का जीवन जीते हैं, जिससे हमें प्रेरणा, सही सूझ, बल, बुद्धियोग मिलता रहे... उन्हें कोई निजी स्वार्थ नहीं होता–'मेरे संबंध में आए हुए किस प्रकार मेरी तरह सुखी हों'–वही एकमात्र उद्यम होता है। परन्तु ऊपर से अत्यंत सामान्य दिखाई पड़ती उनकी जीवन प्रणाली देखने-समझने बाहरी चक्षु की व हमारे मन की नहीं, बल्कि अन्तर चक्षु की–अंतःकरण से पार जाने की जरूरत होती है।

प.पू. पप्पाजी का जीवन हम सभी के लिए अनंत प्रकार से प्रेरणादायी है। मुंबई में साधकों के आदर्शरूप पू. गोरधनकाका हैं-इनका सभी स्वरूपों के साथ साथी का संबंध है। इन्होंने इन सभी गुणातीत स्वरूपों के जीवन को बहुत नजदीक से निहारा है और प.पू. पप्पाजी उन्हें अपना बड़ा भाई मानते हैं। उन पू. गोरधनकाका द्वारा प.पू. पप्पाजी के जीवन के बताये निम्न प्रसंगों से प.पू. पप्पाजी की स्वरुपलक्षी सोच का दर्शन तो होता ही है, साथ ही हमारे साधना मार्ग में यह संजीवनी बूटी का कार्य करेंगे। आईये, हम निम्न दो-तीन प्रसंगों को निहारें और साधना पथ पर नई उमंग-उत्साह से कदम बढ़ायें....

गुरुहरि योगीजी महाराज ने कई हरिभक्तों को मुंबई में 'जन्माष्टमी' बिल्डिंग में रखे थे। उनमें से एक हरिभक्त की ऐसी आदत थी कि वो जब भी कहीं बाहर जाने निकले तो पहले बूट पहनकर फिर ठाकुरजी के पांव छूने जाए। ऐसा रोज़-रोज़ देखकर किसी ने पू. गोरधनकाका को इस बारे बात करी। पू. गोरधनकाका ने प.पू. पप्पाजी को बात करी कि फलां हरिभक्त तो इसकी यह क्रिया चुभती है। यह सुनकर प.पू. पप्पाजी ने तुरन्त उत्तर दिया कि हो सकता है उसका संबंध भगवान के साथ ऐसा हो कि वह शायद भगवान के सिर पर भी अपने बूट रखकर पांव छूए ! हमें तो उसे दिव्य ही मानना चाहिए।

ऐसा ही दूसरा प्रसंग–जन्माष्टमी बिल्डिंग में एक हरिभक्त रोज़ ठाकुर जी के आगे अगरबत्ती जलाए और फिर उसी माचिस की तीली को मेज पर बिछे कपड़े पर ही बुझा दे, जिससे उस कपड़े पर जलने के काले छेद होते जा रहे थे। पू. गोरधनकाका को यह जंचता नहीं था। यह क्रिया चुभती थी। पू. गोरधनकाका ने उसे तो कुछ नहीं कहा, पर प.पू. पप्पाजी के साथ लगाव होने के कारण प.पू. पप्पाजी से बात की। प.पू. पप्पाजी ने तुरन्त ही कहा कि–छेद वो नहीं करता, तुम ही करवा रहे हो। तुम्हें उसकी यह क्रिया चुभनी बंद हो जाएगी, तब वो भी अपने आप बंद हो जाएगा ! और.... हुआ भी ऐसा ही कि पू. गोरधनकाका ने जैसे ही वह देखना-नज़र में लेना बंद करा, तुरन्त ही-उसी दिन से उस हरिभक्त ने मेज के कपड़े पर माचिस की तीली बुझानी भी बंद कर दी !!

प.पू. पप्पाजी का तो सूत्र ही है कि–**'जो सत्य है वो भक्तों को करना चाहिए ऐसा नहीं-बल्कि मानना कि भक्तों जो करते हैं वही सत्य है।'** संबंध वाले सभी में केवल प्रभु का ही कर्ताहर्तापन मानने का केवल सिद्धान्त ही नहीं बल्कि जिसकी जीवन प्रणाली हो-वही ऐसा सूत्र दे सकता है ना !

एक बार ताड़देव में झूठे बर्तनों का ढेर पड़ा देखकर प.पू. पप्पाजी बर्तन मांझने रसोई की ओर गए तो एक सेवक ने उन्हें रोका.. तुरन्त प.पू. पप्पाजी के मुख से महिमा भरे शब्द निकले- 'अगर हरिभक्तों की झूठी थाली मुझे धोने दो तो मैं एक-एक थाली के दस-दस रुपये दूंगा....' संबंध वालों की कैसी महिमा होगी ना !

ऐसे अनेक प्रसंग हैं जिससे पल-पल प.पू. पप्पाजी के विशिष्ट और विरल जीवन का दर्शन होता है... अब नवेम्बर 1996 में प.पू. की 80वीं जन्मजयंती 'भक्ति उत्सव' के रूप में सांकरदा में मनायेंगे। प.पू. पप्पाजी के ऊपर लिखे प्रसंगों से प्रेरणा लेकर माहात्म्यसभर जीवन जीने की सुरुचि से सच्चा **'भक्ति उत्सव'** मनाने भजन व सकंल्प करें-यही गुणातीत स्वरूपों के चरणों में प्रार्थना !

★★★

मानकर काकाजी का वचन.....

(राग – कर चले हम फिदा जानो तन साथियों...)

मानकर काकाजी का वचन लाड़ले
कर दिया काकाजी को अमर लाड़ले

प्रीति अनुपम तेरी काकाजी के प्रति
पूर्ण निष्ठा सुरुचि से झेला वचन
खुद की चंचल वृत्ति जोड़ी अभिप्राय में
बुद्धि, मन और चित्त दिव्यता में ढला
कैसा, चैतन्यशिल्पी मिला लाड़ले
कर दिया... मानकर...

सौंपा जब एक नया ये बगीचा तुम्हें
तू उन फूलों के जीवन का माली बना
सुहृद्भाव की ज्योति को उज्ज्वल किया
तुमने आँधी तूफां से घबराए बिना
काकाजी का तू अनमोल हीरा लाड़ले
कर दिया... मानकर...

काकाजी ने सर्वदेशी पैग़ाम दिया
आज तूने उसी को अखंडित रखा
हर पल प्रभु के ही बल से तू जीता रहा
हर प्रसंग पर भजन का सहारा लिया
कैसा निर्दोष भुलका है तू लाड़ले
कर दिया... मानकर...

तेरी जादू भरी आंखों का ये कमाल
जो भी आया उसी को ही पावन किया
तू किसी का सखा व किसी का पिता
पथप्रदर्शक तो यूँ तू सभी का बना
कैसे भूलेंगे हम तेरा ऋण लाड़ले
कर दिया... मानकर...

करें याहोम चरणों में खुद को तेरे
एक नज़र से ही समझें इशारा तेरा
हम करें बस वही जो तुम्हें हो पसंद
रहें हर पल प्रभु की स्मृति में सदा
ऐसा निर्दोष हमें भी बना लाड़ले
कर दिया... मानकर...

व्रतोत्सवसूची

1. दि.	27.8.96	बुधवार	– राखी
2. दि.	1.9.96	रविवार	– प्र.ब्र.स्व. प.पू. पप्पाजी महाराज की जन्मजयंती
3. दि.	5.9.96	गुरुवार	– जन्माष्टमी, व्रत
4. दि.	8.9.96	रविवार	– एकादशी, व्रत
5. दि.	23.9.96	सोमवार	– जलझीलनी एकादशी, व्रत

PUBLISHED BY SHRI PRABHAKAR RAO *FOR* YOGI DIVINE SOCIETY
'Anirdesh', Kakaji Lane, Swaminarayan Marg, Ashok Vihar-III, Delhi-110 052 (India) Tel.: 7229327, 7249327
Printed by : Chowdhary Mudran Kendra, 714,/200, Shri Ram Marg, South Maujpur, Delhi-110 053